महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का सरंक्षण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा सतत प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report of one day training program on sustainable management of important medicinal plants through conservation and value addition.

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का सरंक्षण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा सतत प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 18 सितंबर, 2024 को शिलारू में किया गया । डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-जी ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य औषधीय पौधों की खेती की जानकारी हितधारकों तक पहुंचाना है, ताकि वो औषधीय पौधों की खेती अपना कर आजीविका का अतिरिक्त साधन विकसित कर सके। उन्होंने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से वैज्ञानिक खेती करने की आवश्यकता है । औषधीय पौधों की खेती विविधिकरण एवं अतिरिक्त आय के लिए अच्छा विकल्प है और किसानो को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए हैं । जिससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते हैं और इन्हे उगाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि संस्थान ने कडु, निहानी, वनककड़ी औषधीय पौधो की उच्च गुणवता वाली पाँच नई किस्म/वेराईटी विकसित की है, जिसका स्टॉक जगतसुख अनुसंधान पौधशाला में है और कहा कि क्षेत्र में उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती करके इसे एक स्थायी आय सृजन गतिविधि के रूप में बनाने की बहुत संभावना है । इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है । उन्होने अपने आस पास की जड़ी-बूटियों की पहचान एवं उपयोग की जानकारी की आवश्यकता पर बल दिया । इसके अलावा उन्होने अपने भोजन में श्रीअन्न/ मोटा अनाज शामिल करने की सलाह दी और कोदा, काओणी, ओगला आदि के महत्व पर चर्चा की और स्वास्थय हेतु भोजन में विविधता की आवश्यकता पर बल दिया । निदेशक महोदय ने स्थानीय लोगों को सिर्फ सेब की कृषि पर आश्रित न रह कर कृषि में भी विविधता शामिल करने की सलाह दी । उन्होने कहा की शुरू में अपने उपयोग हेतु कुछ अन्य बागवानी फसलों को शामिल किया जा सकता है और सफलता प्राप्त होने पर बड़े स्तर पर किया जा सकता है । डॉ. जोगिन्द्र सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने हिमालय क्षेत्र के महत्वपूर्ण औषधीय पौधो की पहचान एवं उनके पारंपरिक उपयोग की जानकारी साझा की । उन्होने कहा की इस क्षेत्र के लिए चोरा, वनककड़ी, महामेधा, निहानी,अतिश, कडु, कुठ उपयुक्त है। इन पौधो की बाज़ार में अच्छी मांग है । इस

प्रशिक्षण कार्यक्रम में रीता भारद्वाज, प्रधान कोट-शिलारू, नारकंडा, शिमला, क्षेत्र के प्रगतिशील किसान एवं मानेश्वर पब्लिक स्कूल के छात्रों सहित 45 लोगों ने भाग लिया। अंत में डॉ॰ जोगिंदर चौहान, ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद दिया ।

****